International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

नगरीय आकारिकी में होने वाले परिवर्तनों का एक विश्लेषण: उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद नगर के संदर्भ में।

डॉ. अमित कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, सी.एस.एन. (पी.जी.) कॉलेज हरदोई।

सारांश

वर्तमान शोध का उद्देश्य मुरादाबाद नगर की नगरीय आकारिकी में होने वाले परिवर्तनों के कारण सामाजिक,आर्थिक एवं जनांकिकीय विशेषताओं के प्रभावों का आकलन करना है। शोध कार्य के हेतु प्राथमिक डेटा में अवलोकन विधि तथा द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। नगरीय आकारिकी से तात्पर्य नगर की आंतरिक संरचना से है। अर्थात नगर की सड़कें, आवासों,जनसंख्या,फसल की गहनता, भूमि उपयोग, कार्यात्मक क्षमता आदि का अध्ययन करना है।विगत कुछ दशकों से नगरों का सामाजिक-आर्थिक विकास के साथ-साथ नगर की आकारिकी में बड़ा परिवर्तन देखने को मिल रहा है। लोगो की जीवन शैली में बदलाव के साथ आर्थिक मानव होना इसका प्रमुख कारण है। पहले व्यक्ति छोटे-छोटे अनियोजित आवासों/मोहल्लो में रहता था लेकिन पिछले एक दशक से इसमें काफी बदलाव देखा जा रहा है जिसका शहरी लोगो की जीवन शैली में बदलाव प्रमुख कारण है।अब व्यक्ति साफ-सुथरी स्वच्छ, हवादार जगह पर रहना पसंद करता है जिसके लिए स्थानीय प्रशासन भी लगातार प्रयास करता है। मुरादाबाद नगर में आवास विकास ,नगर निगम, तथा मुरादाबाद विकास प्राधिकरण नगर से लगे ग्रामीण क्षेत्रों की भूमि का समय- समय अधिग्रहण कर अपनी नगरीय सीमा को लगातार विस्तारित कर रहे हैं। विश्व की लगभग 45% जनसंख्या नगरों में निवासित है जो 2025 तक बढ़कर 50% हो जाएगी। मुरादाबाद नगर की जनसंख्या में भी लगातार परिवर्तन हो रहा है। अध्ययन क्षेत्र में नगरीय जनसंख्या में वृद्धि आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों एवं छोटे नगरीय केंद्रों से होने वाले प्रवास का प्रभाव ज्यादा है। क्योंकि बेहतर जीवन शैली को प्राप्त करने के उद्देश्य से लोग नगर की ओर आकर्षित होते हैं।जिससे न केवल नगरीय

आकृति में परिवर्तन होता है बल्कि नगरीय जनसंख्या में परिवर्तन होता है। नगरीय विस्तार के कारण हुए परिवर्तनों पर सुझाव भी इस शोध पत्र भी प्रस्तुत किए गए हैं।

मुख्य शब्द: नगरीय आकारिकी, भूमि उपयोग, कार्यात्मक क्षमता, जनांकिकीय विशेषता, मुरादाबाद नगर।

प्रस्तावना:

नगर के विकास की योजना बनाने से पहले नगर की आंतरिक संरचना के विषय में ज्ञान होना अति आवश्यक हैं। इसके साथ-साथ उन तथ्यों का भी हमें ध्यान रखना होगा जिन्होंने नगर की आकारिकी या प्रतिरूप के वर्तमान स्वरूप का निर्माण करने में अपना योगदान दिया हैं। नगर की आकारिकी के अंतर्गत नगर की आंतरिक विशेषताओं का अध्ययन किया जाता हैं।जिसके माध्यम से नगर की संरचना तथा अन्य घटकों का पता विश्लेषण किया जाता हैं। **डिकिंसन** के शब्दों में ''यह आवास की योजना तथा निर्माण से संबंधित है जो इसकी उत्पत्ति विकास और कार्यों के रूप में दृष्टिगत और विश्लेषित होती है'' **स्मेल्स** के अनुसार आकारिकी नगरीय प्रदेशों की प्रकृति,उनके कार्य एवं स्वरूप,उनके सापेक्षिक विन्यास तथा उनकी सामाजिक अंतरनिर्भरता की व्याख्या है जो एक नगरीय क्षेत्र के भौगोलिक विश्लेषण को निर्मित करती हैं।

नगर आकारिकी में नगर की सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों पर विशेष ध्यान दिया जाता है जिनका प्रभाव नगर की आकारिकी के ऊपर विशेष रूप से पड़ता हैं।नगर आकारिकी में विभिन्न स्तर पर परिवर्तन देखने को मिलते हैं। कुछ नगर की आकारिकी नियोजित ढंग से परिवर्तित हो रही हैं लेकिन भारत के अधिकांश नगरों की आकारिकी मैं अनियोजित तथा अस्त- व्यस्त फैलाव देखने को मिल रहे हैं। जिस कारण इसकी संरचना या आकार में परिवर्तन हो रहे हैं यह परिवर्तन नगर के लिए एक बड़ी समस्या के रूप में सामने आ रहे हैं क्योंकि नगर के पास इनको व्यवस्थित करने का समुचित व्यवस्था नहीं हैं। नगर विस्तार के कारण नगरों में भीड़-भाड़, सड़कों का जाल, भूमि की कमी,गंदगी, पर्यावरण प्रदूषण आदि समस्याएं बढ़ती जा रही है। अध्ययन क्षेत्र के नगर में इस तरह की समस्याएं सामान्यता देखी जाती है यहां नगर के मूल स्वरूप में काफी अधिक परिवर्तन हो गया है।

नगरीय फैलाव पर जलवायु का भी प्रत्यक्ष प्रभाव देखने को मिल रहा है। गर्म क्षेत्र की जलवायु के आवासों की ऊंचाई अधिक रहती है क्योंकि उनमें वायु का संचरण अधिक से अधिक हो सके। साथ ही यातायात, संचार के साधनों का भी प्रभाव नगर की आकारिकी के ऊपर पड़ रहा हैं। जिस नगर के केंद्रीय भाग में सड़के भिन्न दिशाओं में जाती हैं उसे नगर का आकार अरीय हो जाता हैं। यदि सड़के एक दूसरे को समकोण पर काटती है तो उसका आकार वर्गाकार या आयताकार हो जाता हैं,नदी के सहारे रेखाकर

हो जाता है। मुरादाबाद नगर रामगंगा नदी के तट पर स्थित है जिस कारण इसकी आकार की भी रेखाकर प्रतिरूप जैसा हैं। मुरादाबाद नगर का फैलाव नदी के दाए पर नदी के समानांतर हैं।मुरादाबाद नगर की जनसंख्या 2011 में 887871 थी जो जनपद की कुल जनसंख्या का 32% हैं जबकि ग्रामीण क्षेत्र में जनपद की 67.02% जनसंख्या निवास करती हैं। नगर के ऊपर ग्रामीण जनसंख्या का दबाव बढ़ता जा रहा है क्योंकि ग्रामीण क्षेत्र की जनसंख्या निरंतर प्रवास करके नगर में बस रही है जिस कारण नगर में फैलाव हो रहा हैं। यह फैलाव कुछ हद तक तो नियोजित हुआ,लेकिन जहां सरकारी हस्तक्षेप नहीं है वहां पर नगर का विस्तार अनियोजित हो गया है नगर के पास आवासीय भूमि एवं ग्रीन वेल्ट में निरंतर कमी हो रही है जिस कारण आसपास कि ग्रामीण भूमि का अधिग्रहण कार्य भी लगातार होता रहता हैं। पिछले 20 वर्षों के नगर के फैलाव का अध्ययन किया जाए तो नगर का जो मौलिक स्वरूप था उसमें कई बदलाव देखने को मिलते हैं इस शोध पेपर के माध्यम से इन्हीं बदलावों को जानने का प्रयास किया जा रहा है

अध्ययन क्षेत्र:

मुरादाबाद नगर रामगंगा नदी के दाएं तट पर स्थित है। जिसकी स्थापना 1625 में हुई थी। नगर का अक्षांशीय विस्तार 28°48' उत्तर से 28°52' उत्तर तथा देशांतरीय विस्तार 78°45' से 78°48' पूर्व है। नगर का कुल क्षेत्रफल 79 वर्ग किलोमीटर है जिसकी समुद्र तल से इसकी औसत ऊंचाई 198 मीटर है। नगर की देश की राजधानी दिल्ली से दूरी 167 किलोमीटर है तथा प्रदेश की राजधानी से लखनऊ से 344 किलोमीटर दूर है। नगर के उत्तर में बिजनौर ,पूर्व में रामपुर, दक्षिण में संभल तथा पश्चिम में अमरोहा जनपदों की सीमाएं लगती है। मुरादाबाद नगर की कुल जनसंख्या 88781 तथा साक्षरता दर 68.75% है। मुरादाबाद में ब्रास का कार्य बड़े स्तर पर होता था जिस कारण इसको ब्रास सिटी या पीतल नगरी के रूप में जाना जाता है। वर्तमान समय में मुरादाबाद में एक्सपोर्ट का कार्य अधिक होने लगा है,यहां से होने वाला निर्यात मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका,जर्मनी, कनाडा,ईरान,इराक, इंग्लैंड , मिश्र, तथा अन्य यूरोपीय देशों को किया जाता है।मुरादाबाद पश्चिमी उत्तर प्रदेश का प्रमुख इंडस्ट्रियल एरिया भी इसलिए यहां उद्योगों में हथकरघा उद्योग ,लघु उद्योग, रसायन उद्योग, कागज उद्योग, चिकित्सा उद्योग, आदि प्रमुख रूप से फल फूल रहे हैं। मुरादाबाद उत्तर प्रदेश का मण्डल भी है जिसके अंतर्गत रामपुर,अमरोहा, बिजनौर और संभल जिले आते हैं। मुरादाबाद में नगर निगम है जिसके अंतर्गत 70 वार्ड हैं और लगभग 345 मोहल्ले हैं। मुरादाबाद की जलवायु उपोषण है। यहां मौसम की चारों ऋतुयें देखने को मिलती है। नगर का औसत तापमान ग्रीष्म काल में 30°C से 43°C तक तथा शीतकाल में 3°C से 20°C तक रहता है। यहां की अधिकांश मृदा जलोढ़ प्रकार की है।

प्रशासनिक रूप से मुरादाबाद नगर का महत्व अधिक होने के कारण इसको प्रथम श्रेणी के नगर का दर्जा दिया गया है। 2015 में इसको स्मार्ट सिटी का दर्जा भी दिया गया है। नगर की यातायात कनेक्टिविटी

सड़क एवं रेलवे के माध्यम से देश के सभी बड़े महानगरों से जुड़ी है। ।मुरादाबाद नगर वर्तमान समय में आसपास के छोटे नगरों एवं ग्रामीण क्षेत्रों को बेहतर सुविधाएं जैसे रोजगार, शिक्षा, चिकित्सा, मनोरंजन, व्यापार आदि उपलब्ध करा रहा है।जिस कारण नगर की महत्ता और अधिक बढ़ गयी हैं।

मुरादाबाद नगर का मानचित्र

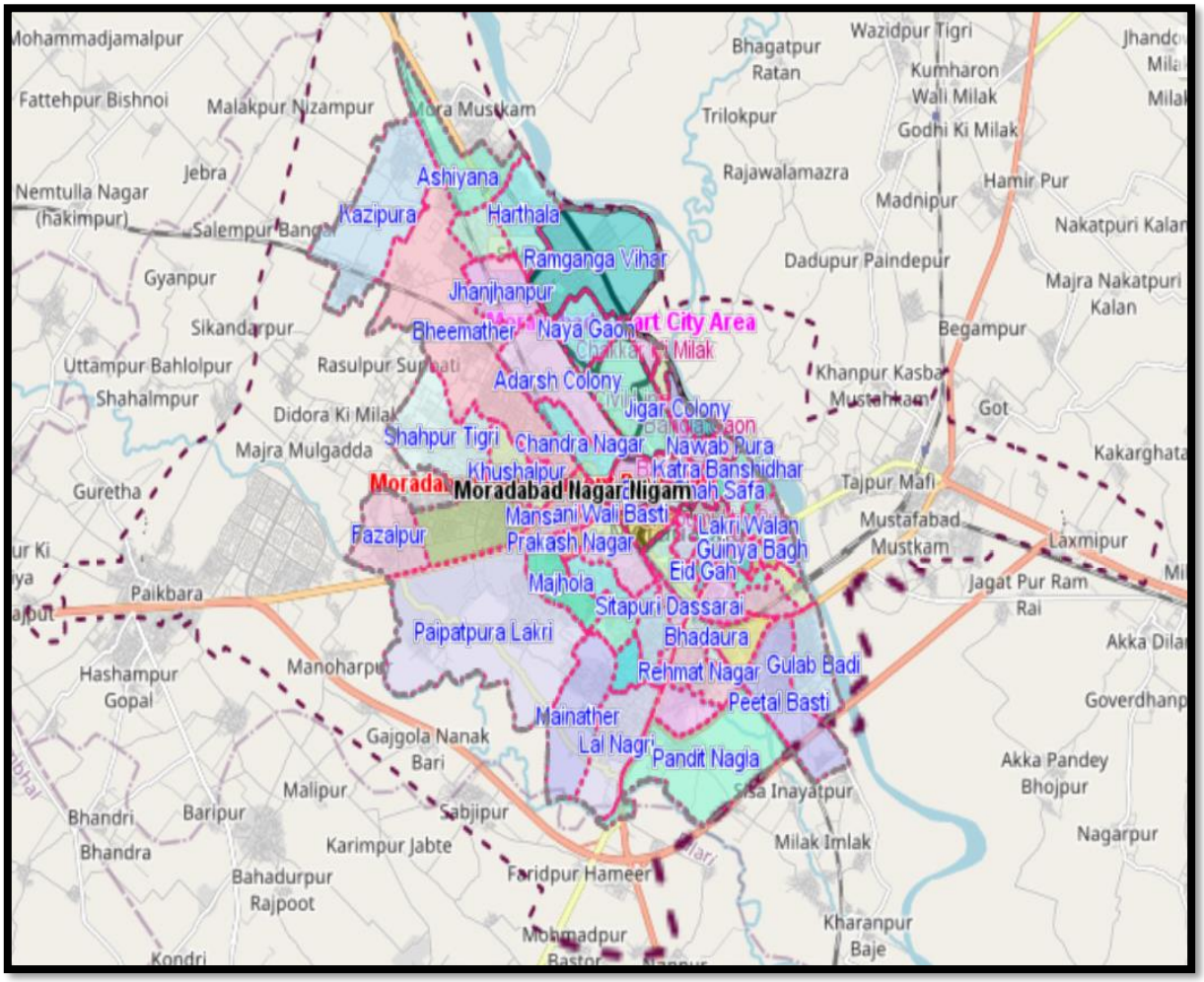

(स्रोत: GIS स्मार्ट सिटी मुरादाबाद वेबसाइट)

शोध के उद्देश्य:

(1) नगर की आकारिकी के साथ उसकी प्रमुख विशेषताओं को जानना।

(2) नगर की आकारिकी का नगर पर प्रभाव को जानना।

(3) नगर की आकारिकी में हुए परिवर्तनों पर सुझाव देना।

(4) नगर के भूमि उपयोग का अध्ययन करना।

शोध विधि एवं डेटा:

मुरादाबाद नगर के आकारिकी के अध्ययन हेतु मुख्य रूप से स्वयं के अवलोकन तथा द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। जिनके विश्लेषण के आधार पर शोध निष्कर्ष निकाले गए है। शोध कार्य हेतु मानचित्र का प्रयोग, जनसंख्या के आंकड़े, गूगल मानचित्र, मुरादाबाद जनपद की वेबसाइट आदि का प्रयोग किया गया है।भूमि उपयोग से सम्बंधित आंकड़ों हेतु अध्ययन क्षेत्र का भ्रमण किया गया है। शोध कार्य में मुख्य रुप से विश्लेषणात्मक विधि तथा वर्णात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। मुरादाबाद नगर से संबंधित डेटा विभिन्न कार्यालयों और नगर निगम से प्राप्त डेटा का प्रयोग किया गया है।

मुरादाबाद नगर की आकारिकी:

(1)भूमि उपयोग:

मुरादाबाद नगर 79 वर्ग मीटर क्षेत्र में फैला है जिसमें नगर की सीमा के अंदर भूमि उपयोग अलग-अलग प्रकार के गतिविधियों के लिए जाना जाता है। नगर केंद्र सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है, जो कुछ विशिष्ट आवश्यकता की पूर्ति करता है। नगर के भूमि उपयोग को समझने के लिए केंद्रीय वलय सिद्धांत, प्रखंड सिद्धांत तथा बहू नाभिक सिद्धांत को ध्यान में रखा जाना आवश्यक है। जिनके आधार पर मुरादाबाद नगर के भूमि उपयोग को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(I) सीबीडी या केंद्रीय व्यापारिक क्षेत्र:

नगर का एक प्रमुख केंद्रीय व्यपारिक क्षेत्र है जिसे अंतर्गत बुध बाजार, कटरा, गंज, टाउन हॉल आदि के क्षेत्रों को शामिल किया जाता है।ये क्षेत्र नगर के केंद्रीय भाग के अंतर्गत मुख्य कार्यात्मक एव आर्थिक क्षेत्र भी है जो व्यापारिक,सामाजिक ,नागरिक जीवन और यातायात का केंद्र है ।इस केंद्र को भी तीन विशिष्ट भागों में विभाजित किया जा सकता है।

(क) डाउनटाउन या फुटकर व्यापार क्षेत्र या रिटेल डिस्ट्रिक्ट:

इसके अंतर्गत बुध बाजार, टाउन हॉल, गंज, अमरोहा गेट ,जी.एम.डी रोड आदि को शामिल किया जाता है। जहां विभिन्न विभागीय स्टोर, दुकाने, बैंक, क्लब, होटल, मेडिकल उपकरण, आदि के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की सामाजिक, सांस्कृतिक ,और राजनीतिक क्रियाओं के कार्यालय होते हैं। यहां पर नगरों की प्रमुख वित्तीय क्रियाएं संपादित की जाती हैं और यह नगर का मुख्य हृदय स्थल के रूप में कार्य करता है। यहां भूमि या दुकानों का किराया अधिक होता है साथ ही इस क्षेत्र से जितना दूरी बढ़ती जाएगी उतना ही भूमि का किराया और भूमि की गहनता में कमी आती जाती है। इस केंद्र पर सड़कों पर छोटे-

छोटे वाहनों की भीड़ लगी रहती है जिनमे दुपहिया वाहनों की संख्या अधिक होती है जिस कारण लोगों का पैदल चलना भी कठिन होता है। बिल्डिंगों का जमघट होता है।

(ख) थोक व्यापार क्षेत्र:

नगर के कटरा,बुध बाजार का आंतरिक भाग ,डिप्टी गंज, सुपरमार्केट ,रेती स्ट्रीट, स्टेशन रोड,कंजरी सराय, जीएमडी रोड आदि क्षेत्रों को उसके अंतर्गत शामिल किया जा सकता है। यहां पर चारों ओर थोक व्यापार का कार्य प्रधानता से होता है। जहां बड़े-बड़े स्टोर,मंडियां, थोक बाजार से संबंधित भवन आदि इसी पेटी के अंतर्गत आते हैं ।नगर में कटरा जिसका प्रमुख उदाहरण है जहां थोक का मार्केट मुरादाबाद जिले में प्रसिद्ध है। इस कार्य के लिए विशिष्ट इमारतों की आवश्यकता नहीं होती है।

(ग) सी.बी.डी परिधि क्षेत्र:

इसके अंतर्गत वह क्षेत्र आता है जो मुख्य केंद्रीय क्षेत्र से बाहर की ओर होता है ।यहां पर मुख्यता बड़े-बड़े होटल का निर्माण होता है ताकि सीबीडी में आने जाने वाले लोगों को रहने की व्यवस्था हो सके। इम्पीरियल चौराहा, स्टेशन रोड, जी. एम.डी. रोड आदि इसी प्रकार के क्षेत्र को प्रकट करते हैं।

(II)प्रशासनिक केंद्र:

नगर का सिविल लाइन क्षेत्र मुख्य प्रशासनिक केंद्र के रूप में कार्य करता है।जहां जिलाधिकारी,वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, जिला कोर्ट, कचहरी ,पोस्ट ऑफिस मुख्यालय आदि प्रशासनिक कार्यालय स्थित है। इसका जुड़ाव नगर के केंद्रीय व्यापारिक क्षेत्र के साथ रहता है।

(III)उच्च मध्यवर्ग:

मुख्य व्यापारिक केंद्र के चारों ओर उच्च मध्यम वर्ग के लोगों काआवासीय क्षेत्र होता है। जिनका जुड़ाव मुख्य बाजार से रहता है। यहां हल्के उद्योग की अवस्थिति भी होती है।इस क्षेत्र में कहीं-कहीं पर मलिन बस्तियां भी देखने को मिलती हैं। इस क्षेत्र में सड़कों की चौड़ाई कम तथा आवासों की अधिकता देखने को मिलती है। नगर में इस क्षेत्र का प्रभाव अधिक होता है क्योंकि नगर को यह क्षेत्र पुराना बसावट वाला होता जिसने नगर के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।मुरादाबाद नगर में लाजपत नगर, गांधी नगर, गुवाहाटी,चिड़िया टोला, आदि क्षेत्रों के अंतर्गत शामिल किया जा सकता है।

(IV)निम्न मध्य वर्ग क्षेत्र :

उच्च मध्यवर्ग के बाद पश्चात इस पेटी का विस्तार होता है इसके अंतर्गत उन लोगों को शामिल किया जाता है जो अपनी रोजमर्रा की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए सीबीडी पर निर्भर होते हैं तथा वहां

कार्य करने के लिए प्रतिदिन जाते केंद्र पर जाते हैं। लेकिन वहां भूमि महंगी,जनसंख्या दबाव अधिक होने के कारण अपना आवास का निर्माण नहीं कर पाते हैं। इसलिए यह नगर से कुछ दूर अपना घर बनाते हैं इन लोगों का नगर के विकास में बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है।मुरादनगर में भी इस प्रकार की स्थिति देखने को मिलती है जिसके अंतर्गत लाइनपार, मझोली,काशीराम नगर, इंद्रा कॉलोनी ,हरथला,हिमगिरि आदि कॉलोनी को इस बेल्ट में शामिल किए जा सकते हैं।इन क्षेत्रों में नगरीय तथा ग्रामीण दोनों प्रकार की विशेषताये देखने को मिलती है।

(V) झुग्गी झोपड़ी या मलिन बस्ती क्षेत्र:

मुरादाबाद नगर निगम के डेटा के अनुसार नगर में कुल 60 स्लम क्षेत्र है जिसमे 2011 की जनगणना के अनुसार नगरीय जनसंख्या 119695 व्यक्ति है जो कुल नगरीय जनसंख्या का 13.48 % है।यहां रहने वाले अधिकांश व्यक्ति दूसरे स्थानों से आकर बसे हैं जिनके पास यहां आवासीय भूमि उपलब्ध नहीं है। यह क्षेत्र विभिन्न प्रकार की समस्याओं से घिरे रहते हैं जैसे गंदे घर ,शौचालय की कमी, स्वच्छ जल की कमी, शिक्षा के साधन उपलब्ध नहीं, जीवन स्तर निम्न,स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी,कुपोषण आदि समस्याओं से घिरे हुए हैं। जो इस क्षेत्र को अन्य नगरीय क्षेत्रों से अलग करता है।

(VI) ग्रीन बेल्ट क्षेत्र

नगर में बढ़ती जनसंख्या और आवश्यकताओ को देखते हुए नगर की आकारिकी में हरित क्षेत्र को स्थान दिया गया है ।नगर के मास्टर प्लान 2021 तथा 2031 में ग्रीन बेल्ट के लिए काफी स्थान खाली छोड़ा गया है।ताकि लोगो को स्वच्छ हवा और खुलापन महसूस होता रहे। इससे नगर आकर्षक लगता है।

(2) नगर की जनांकिकीय संरचना:

2011 की जनगणना के अनुसार मुरादाबाद नगर की कुल जनसंख्या 887871 है। जिसमें पुरुषों की जनसंख्या 464580 तथा स्त्रियों की जनसंख्या 423291 है। 2001 से 2011 के बीच दशकीय जनसंख्या वृद्धि 38.39% है। नगर की कुल साक्षरता दर 68.75% है जिसमें पुरुषों की साक्षरता 72.22% तथा महिला का 68.75% है। नगर में महिला-पुरुष लिंगानुपात 911 तथा चाइल्ड लिंगानुपात 910 है। 0 से 6 वर्ष के बच्चों की कुल संख्या 116149 है जिसमें 60803 लड़के तथा 55346 लड़कियां हैं।मुरादाबाद नगर की जनसंख्या जिस तेजी से बड़ रही हैं उसके कारण नगर की आकारिकी प्रभावित हो रही हैं।

(3) सड़क व्यवस्था:

(I) प्रधान व्यापारिक सड़कें: नगर की केंद्रीय व्यापारिक क्षेत्र से शहर के अन्य मार्गों से जोड़ने वाली सड़कें आती हैं।इन सड़कों पर अत्यधिक व्यस्तता रहती है ।इन पर दुपहिया वाहन,E-रिक्शा, ऑटो आदि वाहनों की अधिकता रहती है जिस कारण यह पैदल चलना भी बहुत कठिन होता हैं।

(II) बड़ी सड़कें: इसके अंतर्गत नगर से गुजरने वाली है नेशनल हाईवे, स्टेट हाईवे तथा अन्य नगरों को जोड़ने वाले मार्गो को शामिल किया जाता है। इन मार्गो के माध्यम दिल्ली, गाजियाबाद,लखनऊ, मेरठ देहरादून,काशीपुर, रामपुर,बरेली आदि नगरों को यातायात सुगम बनाया गया है। इसके अंतर्गत कुल सड़कों का 2% क्षेत्र आता है। सड़कों की चौड़ाई 9 मीटर से 20 मीटर तक देखने को मिलती है।

(III) मध्यम सड़कें: यह सड़क नगर के तृतीय स्तर वाले आवासीय क्षेत्रों में देखने को मिलते हैं। जिसकी औसत चौड़ाई 6 मीटर से 10 मीटर तक देखने को मिलती है।यह नगर के अधिकांश मुहल्लों को आपस में जोड़ने का कार्य करती हैं।इनपर जनसंख्या का अधिक दबाव भी देखने को मिलता है। यह नगर की 70% सड़कों का भार वहन करती है।

(IV) छोटी सड़के: यह नगर के आवासीय क्षेत्रों की आंतरिक सड़के हैं। जिसके अंतर्गत औसत चौड़ाई 3 मीटर से 6 मीटर तक है। यह सड़कें नगर के पुराने बसे हुए मोहल्लों में अनियोजित ढंग से फैली हुई है। कुछ स्थानों पर तो इनकी चोड़ाई 2 मीटर से 4 मीटर तक ही देखने को मिलती है, वहां केवल दो पहिया वाहन ही इन सड़कों पर जा सकते है। नगर के केंद्रीय भाग से लगी कॉलोनियों में इस तरह की सड़कें अधिकता में है।इसके अंतर्गत नगर के 30 प्रतिशत सड़क क्षेत्र आता है

(V) नई आवासीय संरचना में सड़कें: विगत दो दशक से नगर में में जो भी कॉलोनी का विस्तार हुआ है या वर्तमान में हो रहा है उसमें सड़कों को विशेष ध्यान दिया गया है। इसके अंतर्गत सड़कों की चौड़ाई 9 मीटर से लेकर 20 मीटर तक चौड़ी बनायीं जा रही है, जिस कारण कॉलोनी में सड़क मार्ग पर भीड़ भाड़ की स्थिति नहीं बनती है। इस प्रकार का उदाहरण मुरादाबाद नगर में बुद्धि विहार ,आशियाना दीनदयाल नगर , रामगंगा विहार, वेब सिटी,नया मुरादाबाद आदि कॉलोनियों में देखने को मिलती है।

नगरीय आकारिकी के बदलते स्वरूप का प्रभाव:

1. भूमि मूल्य में वृद्धि- मुरादाबाद नगर में आवासीय तथा व्यवसायिक दोनों प्रकार की भूमि के मूल्य में लगातार वृद्धि देखने को मिल रही है जिस कारण नगरीय क्षेत्र में प्रवासित लोगों को भूमि का मूल्य अधिक होने के कारण आवासीय भूमि खरीदने में कठिनाई होती है। इस कारण से ये लोग नगर से सेटे ग्रामीण क्षेत्रों में अपने आवासों का निर्माण करते हैं जिससे नगर की आकारिकी पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

2. आवासों की कमी- जनसंख्या के अधिक दबाव के कारण नगर में आवासों की काफी कमी देखने को मिलती है।

3. कृषि भूमि का अधिग्रहरण- शहरी क्षेत्र में भूमि की कमी के कारण नगर निगम और शासन द्वारा शहरी सीमा से लगे ग्रामीण क्षेत्र की कृषि भूमि का अधिग्रहण समय-समय पर किया जा रहा हैं जिस कारण कृषि योग्य भूमि की कमी हो रही हैं। भूमि अधिग्रहण का किसानों द्वारा निरंतर विरोध किया जाता हैं।

4. परिवहन की समस्या- नगर में बाहर से आने वाली अधिक जनसंख्या के कारण परिवहन की व्यवस्था भी चरमरा जाती है क्योंकि नगरीय क्षेत्र में सड़कों को चौडा करने की भी एक निश्चित सीमा होती है यदि उसपर अधिक वाहन आ जाते हैं तो नगर में जाम की समस्या हो जाती है।

5. नगर केंद्र में अधिक भीड़ भाड़- नगर का अधिक विस्तार होने के कारण नगर की सीबीडी पर अधिक दबाव रहता है। अत्यधिक भीड़-भाड़ के कारण नगर की सीबीडी में दिन के समय पैदल चलना भी मुश्किल हो जाता है।

6. अपराधों में वृद्धि- नगरीय सीमा में ऐसे ग्रामीण क्षेत्र भी आ जाते हैं जो ना तो पूर्णतया नगर है ना ही पूर्णता ग्रामीण क्षेत्र होते हैं और उसमें रहने वाली जनसंख्या नगर से ज्यादा प्रभावित होती है और वह अपनी आवश्यकता की पूर्ति नहीं कर पाते हैं तो उनमें अपराधी प्रवृत्ति आ जाती है। जिस कारण नगर में अपराध बड़ जाते हैं।

7. प्रशासनिक समस्या-नगर का विस्तार अधिक हो जाने के कारण प्रशासन को भी कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है क्योंकि प्रशासन की पहुंच दूर वाले क्षेत्रों में काम हो जाती है

8. मलिन बस्तियों की संख्या में वृद्धि- नगरी क्षेत्र में अधिक प्रवास होने के कारण मलिन बस्तियों की संख्याओं में भी वृद्धि हो गई है

9. आर्थिक असमानता- आकारिकी के बदलते स्वरूप के कारण नगर अलग-अलग भागों में विभाजित हो जाता है। महंगी कॉलोनी में रहने वाले लोग काफी अमीर होते है वहीं दूसरी और मलिन बस्तियों में रहने वाले लोग काफी गरीब और मजदूर किस्म के होते हैं। इस कारण एक ही नगर में भिन्न- भिन्न समाज के मध्य आर्थिक असमानता भी पैदा हो जाती है।

10. प्रदूषण की समस्या और अधिक बड़ जाती हैं।

11. ग्रीन स्पेस की कमी हो गई है।

सुझाव:

1. मुरादाबाद स्मार्ट सिटी में शामिल हो गया है इसके लिए मास्टर प्लान को तत्काल प्रभाव से लागू करते हुए नगर को स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित किया जाना चाहिए।

2. 2.नगर की आकारिकी को बेहतर बनाने के लिए मुरादाबाद निगम को हर आय वर्ग की मांग के अनुरूप आवासीय कालोनी बनाकर उनका वितरण करना चाहिए।
3. 3.जो अनियोजित प्राइवेट कालोनियां विकसित हो रही उनकों रोका जाना चाहिए।
4. नगर की सड़कों का चौड़ीकरण अधिकतम हो चुका है वर्तमान में नगर को एक फ्लाइओवर की आवश्यकता है। जो गुलाब बाड़ी से लेकर कॉसमॉस हॉस्पिटल तक बनाया जाए। जिससे नगर की सड़कों पर जाम से मुक्ति मिल सकेगी।
5. नगर की मुख्य सीबीडी बुध बाजार और उसके आसपास के क्षेत्र जैसा एक सीबीडी क्षेत्र और विकसित करना चाहिए ताकि मुख्य सीबीडी से नगर की निर्भरता कम हो सके।
6. नगर को सुंदर दिखने के लिए नगर की सड़कों के दोनों ओर कम ऊंचाई वाले हरे पौधे लगाए जाने चाहिए।
7. नगर में हरित पट्टी को ओर विस्तारित करना चाहिए।
8. नगर में जाम और भीड़-भाड़ से निपटने के लिए मेट्रो चलाई जानी चाहिए। 10. ग्रामीण क्षेत्र से नगर में होने वाले प्रवास पर रोक लगाने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में नगर जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
9. नगर में साफ सफाई की उचित व्यवस्था की जानी चाहिए इसके लिए जन जागरूकता कार्यक्रम चलाने चाहिए।
10. रामगंगा नदी के बाएं तट पर भी नगर के विस्तार को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।
11. नवीन कॉलोनियों को पूर्णता नियोजित बनाया जाए जिसमें नागरिकों की सभी सुविधाओं का ध्यान रखा जाए।
12. नगर में आवारा घूमने वाले पशुओं के लिए नगर से बाहर अलग व्यवस्था की जाए।
13. नगर में कचरा निस्तारण का उचित प्रबंध करना चाहिए।
14. जनसंख्या नियंत्रण पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।
15. मालिन बस्तियों पर नियंत्रण लगाकर उनको पक्के तथा स्वच्छ आवास में बदल दिया जाए।

निष्कर्ष:-

मुरादाबाद नगर पुराना और तेजी से विकास के पथ पर बढ़ता नगर है जो पश्चिमी उत्तर प्रदेश के प्रमुख आर्थिक नगरों में शामिल है। नगर के विकास के लिए समय-समय पर जिला प्रशासन एवं मुरादाबाद विकास प्राधिकरण द्वारा विशेष प्रावधान किए जाते हैं जिससे नगर को नगर को विकास के नए आयाम पर पहुंचा जा सके। नगर की आकारिकी में काठ रोड तथा दिल्ली रोड पर तो अधिक विकास एवं विस्तार

हो गया है जिस कारण यहाँ का भूमि उपयोग भी बदल गया हैं,लेकिन रामपुर रोड और काशीपुर रोड पर विकास की गति बहुत धीमी है जिसको तीव्र करने की आवश्यकता है। नगर की आकारिकी को बेहतर करने के लिए चारों दिशाओं में कार्य करने की आवश्यकता है। नगर के लिए जो मास्टर प्लान बनाया जाता है उसको जल्द से जल्द लागू करके इसे नवीन एवं आधुनिक नगर रूप में स्थापित किया जाने की आवश्यकता है। साथ ही इस शोध पेपर में ऊपर दिए गए सुझावों को लागू कर देने से नगर की आकारिकी के ऊपर होने वाले नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सकता हैं। नगर में हुए सुधारो से निश्चित तौर पर नगर की जनता लाभान्वित हो सकेगी और मुरादाबाद नगर स्मार्ट सिटी के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ:

1. 1.Bosh , A .-“Studies in India’s Urbanization,1901-1971', Tata Mc Graw Hill, Bombay, 1973.
2. Bhattacharya , B .-“Urbanization , Urban Sustainability and the Futute of Cities', Concept Publishing Company Pvt.Ltd.,New Delhi, 2010.
3. 3.Bansal,S.C.-“Urban Geography',Meenakshee Publication, Meerut,2014.
4. 4.Dubey,K.K&A.K. Singh-“Urban Environment in India:Problems and Prospects',Inter-India Pub.,New Delhi,1986.
5. 5.Garnier,J.B. & G.Chabot- “Urban Geography', Longman, London, 1967.
6. 6.Maurya,S.D.- Urban Geography,Sharda Pustak Bhawan,Allahabad
7. John R. Short- An Introduction To Urban Geography, Rawat Publication, Jaipur
8. 8.Oliveira Vitor- Urban Morphology An Introduction to the Study of the Physical Form of Cities
9. सिंह ब्रजभूषण, : भूमि उपयोग क्षमता अवस्था एव अनुकूलतम उपयोगउत्तर-भारत, भूगोल पत्रिका
10. चान्दना, आर0सी0 (1994) : जनसंख्या भूगोलः द्वितीय संस्करण, कल्याणी पब्लिकेशन
11. सिंह, ओमप्रकाश (2014): ‘‘नगरीय भूगोल’’।
12. सिंह,राजेश: ‘‘ग्रामीण भूगोल ’’ वन्दना पब्लिकेशन्स, द्वितीय तल,जे.एम.ड़ी. हाऊस 4- बी,अंसारी रोड़ दरियागंज नई दिल्ली
13. मास्टर प्लान मुरादाबाद 2021 और 2031
14. भारत जनगणना 2011

15. 2011 सम्बन्धित जिले की आधिकारिक वेवसाइटें और साँख्यिकी पत्रिकाऐं।
16. स्थानीय व राष्ट्रीय समाचार पत्र एवं मासिक पत्रिकाऐं आदि।